155

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta®

Issue-36, Vol-11 Oct to Dec 2020

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

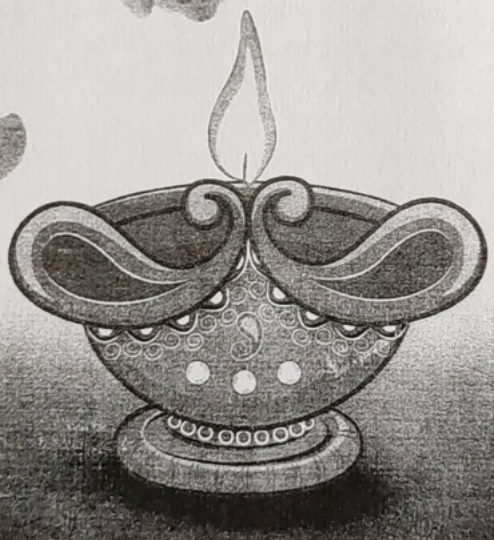

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0179

में देवता वसु थे। उन्होंने ब्रह्मचर्य का कड़ा पालन करके योग विद्या द्वारा अपने शरीर को पुष्य कर लिया था।

माना जाता है कि भीष्म ही युद्ध में सबसे अधिक उम्र के थे। अपने पिता को यह भी वचन दिया था, कि वे आजीवन हस्तिनापुर के सिंहासन के प्रति वफादार रहेंगे, एवम उसकी सेवा करेंगे. उनकी इसी भीष्म प्रतिज्ञा के कारण इनका नाम भीष्म पड़ा. और इसी के कारण महाराज शांतनु ने भीष्म को इच्छा मृत्यु का वरदान दिया, जिसके अनुसार जब तक वे हस्तिनापुर के सिंहासन को सुरक्षित हाथो में नहीं सौप देते, तब तक वे मृत्यु का आलिंगन नहीं कर सकते है.

संदर्भ ग्रंथ

(१) जयसंहिता किंवा आदिभरतम केशवरामकाशास्त्री

(२) भारतसंहिता के प्रमुख अंश डो. भारतीबेहन के शेलत

(३) महाभारत में धर्म डो. शकुन्तला रानी तिवारी

४) महाभारत की कथाएँ महेश शर्मा

५) महाभारत ऐक दिव्य – दृष्टि सुमन कुमार शर्मा

❑❑❑

45

अदम की कविता का विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. उमेश कुमार सिंह
एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ,
महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, महाराष्ट्र

****

शोध सारांश:

अदम की कविता में गरीबी, सामाजिक सरोकारों, राजनीति का सच, एक दर्पण की तरह सच्चाई एवं समय से संघर्ष करते रहने से भटककर यदा–कदा ही कभी किसी दूसरे रास्ते पर कदम रखा होगा। अदम की कविता अपने देशकाल और मानव संघर्ष का इतिहास ही नहीं है बल्कि सामाजिक सरोकार का एक मजबूत दस्तावेज माना जा सकता है। उनकी कविता में समकालीन घटनायें, आम आदमी का दुख–दर्द, भूख–प्यास, मजबूरी एवं सामाजिक सरोकारों के रूप में खुलकर संघर्ष करती हुई प्रतिबिम्बित होती है। अदम की कविता को पढ़ते हुये बार– बार यह एहसास होता है कि बदलाव की धरती पूरी तरह तैयार है उसमें अदम की कविता मात्र एक लौ का काम करती है।

Key words सामाजिक – Social Sociable सरोकार – Concern nLrkost & Independent Document लुहार – Blackउपजी, पगडंडी–Footpath, आमादा – Solicitous, मनोहारी – Attractive, विबाई – Bivaai, kibe on the heel, जुल्मों – Atrocites cat &Barren Banjar

शोध प्रविधि: इस शोध पत्र में आधुनिक आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

स्व प्रमाणित

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 | Issue-36, Vol-11 | 0180

प्रस्तावना

अड़ोर्नो ने लिखा है कि जर्मनों के कान्सट्रेशन केम्प्स की सच्चाई जान लेने के बाद कविता लिखना असंभव हो गया है क्योंकि इन सबको जान लेने के बाद फूल पत्तियों की बात करना, कलावादी साहित्य को पढ़कर आनंद लेना, उसके साथ जुड़ना मुश्किल हो जाता है। अदम की कविता में विद्रोह, गरीबी, सामाजिक सरोकारों और राजनीति से भटककर शायद भूले–भटके ही कभी किसी दूसरे रास्ते पर कदम रखा होगा। अदम की कविता अपने देशकाल और जन संघर्ष का इतिहास ही नहीं है बल्कि सामाजिक सरोकार का एक मजबूत दस्तावेज है। उनकी कविता में समकालीन घटनायें, आम आदमी का दुख–दर्द, भूख–प्यास, मजबूरी एवं सामाजिक सरोकारों के रूप में खुलकर विद्रोह करती हुई प्रतिबिम्बित होती है। अदम की कविता को पढ़ते हुये बार– बार यह एहसास होता है कि बगावत की धरती पूरी तरह तैयार है उसमें अदम की कविता मात्र एक चिंगारी का काम करती है।

अदम एक कवि होने के नाते किसी बात को कहने से कभी नहीं चूकते हैं वे सदैव गाँव में रहे और सदैव गाँव के विकास करने पर विशेष बल देते रहे हैं। वे अपनी कविता में लुहार के हथोड़े की चोट के मानिन्द प्रहार करते हुए कहते हैं। भारत में अनेक वर्षों से गाँवों का विकास फाइलों के अंबार में दब सा गया है और फाइलों से निकलकर आगे नहीं बढ़ता है, न जाने और कितने सालों में विकास गावों में पहुँच पाएगा। अदम उन लोगों के पक्षधर हैं और सदैव उन्हीं की रहनुमाई करते हुये नजर आते हैं जिनका जिक्र वेदों में हाशिये पर भी नहीं किया गया है। वेद भारत की संस्कृति की धरोहर हैं। दुनियाँ में वेदों को आदिग्रंथ माना जाता है। इसीलिए अदम उन सीधे–साधे लोगों को आगाह करते हुए कहते हैं।

अदम जब समाज के लोगों के दुख–दर्द को रौशनी में लाकर नया इतिहास लिखने की बात करते हैं। तब इस बात से सहज ही अंदाज लगाया जा सकता है कि वे वर्तमान व्यवस्था से अधिक संतुष्ट दिखाई नहीं देते हैं, तभी तो वे जीवन भर दर्द की स्याही में अपनी कलम डुबोकर नगाड़े की तरह तीखी आवाज करते हुए शब्दों में, समाज के सताए हुये लोगों की पारवार रहित पीड़ा को, स्वयं महसूस करते हुए उसके बारे में लिखने के लिए उस सागर तट पर स्थित प्रथम प्रकाश स्तम्भ की तरह अटल होकर लिखते रहे हैं।

अदम गोंडवी ने एकदम वेबाक तरीके से विधायक निवास के कच्चे सच की सच्चाई को अपनी कविता में बयां ही नहीं किया है बल्कि उन्होने इस कविता के द्वारा जनता के खिदमतगारों की ऐसी कलई खोली है जिसका कोई मुकाबला करना बहुत आसान है। उनकी कविता में रामराज को व्हिस्की और भुने हुए काजू के साथ विधायक निवास में ठहाकों के साथ उतर आने की बात बयान करते हैं। इतना ही नहीं है उन्होने इस बात को अपने पूरे होशो हवास में विद्रोह करने के अतिरिक्त किसी अन्य विकल्प के न होने की बात कही हैं।

काजू भुने हैं प्लेट में, व्हिस्की गिलास में।
उतारा है रामराज्य विधायक निवास में१
आजादी का ये जश्न मनायें वो किस तरह,
वो आ गए फुटपाथ पे घर की तलाश में२
जनता के पास एक ही चारा है, बगावत,
ये बात कह रहा हूँ मैं पूरे होशो–हवास में३

अदम की कविता में गरीबी और गरीबों की बस्ती से बड़ा नजदीकी रिश्ता जान पड़ता है। तभी तो एक अदम कबीर की तरह भीड़ के बीचों–बीच खड़े होकर अपने गाँव, अपने देश की गरीबी और भुखमरी का खुले आम ऐलान करते हुए कहते है, जब भी और जहां भी फटे कपड़े पहनकर कोई व्यक्ति जा रहा हो। तब समझ लेना वह पगडंडी शर्तिया अदम के गाँव को जाती है। शायर ने अपने गाँव के रास्ते के लिए किसी सड़क और चकरोट की बात नहीं की है बल्कि वे तो किसी पगडंडी की बात करते हैं। अदम गरीबी में हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और बौद्ध की गरीबी की बात नहीं करते हैं। उस देश की गरीबी की बात करते है जिस देश के बारे में कभी गांधी जी ने कहा था, भारत गावों में बसता है। आजाद भारत का वह गांव अब भी कितना उपेक्षित है, अदम इसे

स्व प्रमाणित

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0181

आपकी कविता में प्रत्यक्ष दिखाते हैं। आज भी सत्तर से अधिक साल के प्रजातन्त्र के सूरज के प्रकाश की किरण गावों तक नहीं पहुंच सकी है।

फटे कपड़ों में तन ढांके गुजरता हो जहां कोई,
समझ लेना वो पगडंडी अदम के गाँव जाती है। ४

यह सत्य है कि अदम अपनी कविता में कदम–कदम पर बगावत और विद्रोह की बात करते हुए नजर आते हैं किन्तु जिस समय वे बच्चों की आंख पानीली देखते हैं। तब तब वे अधिक जुनून में बगावत करने पर आमादा हो उठते हैं।

बगावत के फूल खिलते हैं दिल के सूखे दरिया में,
मैं जब भी देखता हूँ आँख बच्चों की पनीली है ५

दुनियाँ में फ्रेंच लोग किसी बात को उल्टा कहने के अपने एक निराले अंदाज के लिए जाने जाते हैं। आज यदि अधिक ठंड है तब वे कहेंगे आज बहुत ठंड नहीं है। ठीक उसी तरह अदम भी अपने गाँव की बदहाली का जिक्र एक निराले ढंग से करते हैं वे बस इतना कहते हैं। सड़क है किन्तु उन पर सिर्फ गडढ़े ही हैं। बिजली और पानी की बात छोड़ ही दीजिए। अर्थात नहीं है और सबसे अंत में कहते हैं हमारे शहर गोंडा की फिजा कितनी सुहानी और मनोहारी है।

महज सड़कों पे गड्ढ़े, न बिजली है न पानी है।
हमारे शहर गोंडा की फिजा कितनी सुहानी है६

अदम ने देश के दंगों की असली वजह को पहचाना ही नहीं है बल्कि उनके कारणों को भी बड़ी बारीकी से जाना है। तभी तो वे अपनी कविता में बयान करते हैं। शहरों में जब–जब दंगे होते हैं तब–तब गरीब और गरीबों के ही घर जलाए जाते हैं। तब–तब इन दंगों से कोठियों के लॉन के दृश्यों के मंजर (अट्रैक्शन) बढ़ जाते हैं, मेहनतकश लोगों के हाथों में श्रम करते–करते छाले पड़े हुए हैं और इसी श्रम के नाते उनके पैरों की विबाई फटी गयीं हैं। इन्हीं मेहनतकश लोगों की मेहनत के बल पर महल बनते ही नहीं हैं बल्कि उनमें खूबसूरती भी इन्हीं की शक्ति के बल पर दिखाई देती है।

शहर के दंगों में जब भी मुफलिसों के घर जले,
कोठियों की लान का मंजर सलोना हो गया ७

अदम की कविता में जहां भुखमरी की आग में जलने की बात है अर्थात जहां लोगों को रोटी मिलने का टोटा पड़ा हुआ है और दूसरी ओर एक वर्ग उन लोगों को भटकाटकर अपने मुफात के लिए इसे नसीब का खेल बता रहेहैं। वे बहुत चिंतित दिखाई देते हैं क्योंकि जब से गांव में लोगों की हर शाम भुखमरी में गुजरने लगी है। उसी समय से गरीब से गरीब के रिस्ते बेमानी होकर रह गए हैं। अब तो इन जुल्मों की इंतेहा हो गई है। गरीब के आँसू अब शोलों में ढलेंगे अर्थात अब जुल्म के खिलाफ विद्रोह होकर रहेने की बात करते ।

इक हम हैं भुखमरी के जहन्नुम में जल रहे,
इक आप है दुहरा रहे किस्से नसीब के ८
उतरी है जबसे गाँव में फाकाकशी की शाम,
बेमानी होके रह गए रिश्ते करीब के ९
इक हाथ में कलाम है और इक हाथ में कुदाल,
वाबसता है जमीन से सपने अदीब के १०
कब तक सहेंगे जुल्म रफीकोंदूरकीब के।
शोलों में अब ढलेंगे ये आँसू गरीब के ११

अदम अपने आस–पास के उन हरामखोर लोगों को भी नहीं बक्शते हैं जो मेहनत न करके मेहनकशों के श्रम पर पलते रहे हैं किन्तु अब वो उम्र के अंतिम पड़ाव में प्रधान बनाकर प्रथम पंक्ति में आकर बैठ गए हैं। यही लोग आज उस बंजर और परती जमीन के पट्टे श्रमिक मेहतकशों को दे रहें हैं जिस जमीन में किसी अनाज की पैदावार नहीं नहीं ली जा सकती है। यह जमीन श्रमिकों को मियादी बुखार में वर्जित रोटी देने के समान है क्योंकि मियादी बुखार की कमजोरी की हालत में रोटी देना वर्जित होता है। अर्थात जो अपनी मेहनत मजदूरी के बल पर रोटी कमा के खा लेते हैं। उससे भी कहीं हाथ न धो बैठें।

जितने हरामखोर थे कुर्बो–जवार में।
परधान बनके आ गये अगली कतार में १२
दीवार फाँदने में यूं जिनका रिकार्ड था,
वे चौधरी बने हैं उमर के उतार में१३
बंजर जमीन पट्टे में दे रहे हैं आप,
ये रोटी का टुकड़ा है मियादी बुखार में १४

स्व प्रमाणित

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 Issue-36, Vol-11 | 0182

अदम अपने देश वासियों द्वारा अपने देश वासियों पर होते हुए जुल्मों से बहुत विचलित होते हैं। तभी तो वे जुल्मों करने वालों से कहते है इन जुल्मों की निरंतरता को तेज और तेज बनाकर रखिए ताकि दुनियाँ वाले चंगेज खाँ के जुल्मों के इतिहास को भूलकर अपने देश के लोगों के जुल्मों के इतिहास को याद करते रहें। इनसान को मजहब के नाम पर सदैव छला जाता रहा है

तेजतर रखिए मुसलसल जुल्म के एहसास को।
भूल जाये आदमी चंगेज के इतिहास को १५
मजहबी दंगों को भड़काकर मसीहाई करो।
हर कदम पे तोड़ दो इंसान के विश्वास को १६

अदम जब अपनी कविता में, अपने मृत शरीर को, अपने कंधों पर उठाने की बात करते हैं। तब वे अपनी जड़ों से उखड़ने की बात करते हैं, विस्थापित होने की बात करते हैं। उन्हें अपने गाँव से बिछुड़ने की बहुत भारी पीड़ा होती है। सच में देखा जाय तो अपने वतन से उखड़ने के बाद कोई भी व्यक्ति जीवन जीता अवश्य है किन्तु वह एक जीवित मृत शरीर की तरह हो जाता है। इस बात की पुष्टि जोश मलीहाबादी शायर की भारत छोड़कर पाकिस्तान जाते वक्त लिखी गजल से की जा सकती है। (ऐ मलीहाबाद के रंगी गुलिस्तां सलाम —— जोश मलीहाबादी की गजल)

यूं खुद की लाश अपने कंधों पे उठाए हैं।
ऐ शहर के बाशिंदों ! हम गांव से आए हैं। १७

अदम जैसा कवि भी विचलित होने से नहीं बचता है। जब वह मजहब पर बारीकी से गौर करता है। वह अपनी कविता के माध्यम से कहता है— क्या दुनियाँ की किसी धार्मिक पुस्तक में लिखा है कि शोषण करना पाप है अन्याय है शायद नहीं ? इसलिए इस दुनियाँ के लोग शोषण करने से किसी मोके को अपने हाथ से नहीं जाने देते हैं. इस सबको अपनी आँख से देखकर शायर मजहब को दिखावा और डोंग तक कहने से नहीं चूकता है।

क्या किसी सदग्रंथ में आया कि शोषण पाप है।
इसलिए कहता हूँ मजहब ढोंग है अभिपाप है। १८

अदम हाशिए के उन श्रमिक और खेतिहर मजदूर लोगों की निरंतर बात करते हैं जिन्हें गरम रोटी की खुशबू भी नहीं मिल पाती है, वे लोग रोटी मिल जाने पर संतुष्ट होने का अहसास करते हैं। वे किसी परलोकिक प्यार के मधुमास को लेकर क्या करेंगे, जिनके पेट भरने के लिए रोटी के लाले पड़े हैं।

गरम रोटी की महक पागल बना देती ही हमें।
पारलौकिक प्यार का मधुमास लेकर क्या करें १९

अदम अपनी कविता में जिन गरीबों की बात करते है, उनकी पीढ़िया सदियों से गरीबी में जीवन यापन कर रही हैं। उन हाशिये पर रहने वाले लोगों के जीवन को तवज्जो देने की बात करते हैं, जो इतिहास और साहित्य से नदारद हैं। देश की उस विशेष जाति और समाज ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जिस जाति के श्रम के बल पर पूरा समाज स्वस्थ और अच्छा जीवन जीने का दंभ भरता है।

आइए महसूस करिए जिंदगी के ताप को।
मैं चमारों की गली तक ले चलूँगा आपको
जिस गली में भुखमरी की यातना से ऊबकर।
मर गई फुलिया बिचारी कल कुएं में कूदकर २०

निष्कर्ष—

अदम की कविता के इन तथ्यों के आलोक और प्रस्तुत पुष्ट प्रमाणों के आधार पर निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है। कि अदम की कविता को हिंदी की मानक भाषा की कविता कहने से इंकार नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही अदम की कविता हिन्दी उर्दू की खाई को एक पुल की तरह पाटने वाली कविता प्रतीत होती हैं तथा उनकी कविता जीवन की तल्ख सच्चाई की व्याख्या प्रस्तुत करती हुई परिलक्षित होती है किन्तु अंत में इतना अवश्य कहा जा सकता है, अदम की कविता और गजलों में मासूक का चेहरा नहीं बल्कि गरीबी की नजदीकियां, समय से मुठभेड़ है। अदम व्यवस्था की आंख में आँख डालकर ही नहीं बल्कि उंगली डालकर बात करते हैं अदम के यह तेवर किसी और कवि के यहां नहीं मिलते है।

संदर्भः

१. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६६
२. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं.

स्व प्रमाणित

MAH MUL/03051/2012 | ISSN: 2319 9318 | Vidyawarta® Peer-Reviewed International Journal | Oct. To Dec. 2020 | Issue-36, Vol-11 | 0183

३. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६६
४. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ९५
५. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ३८
६. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ३९
७. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ४९
८. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
९. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
१०. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
११. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६१
१२. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१३. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१४. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ६७
१५. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७८
१६. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७८
१७. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ७६
१८. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. १०८
१९. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. ४१
२०. अदम गोंडवी, धरती की सतह अनुज प्रकाशन, इंद्रप्रस्थ मार्केट, बाबागंज, प्रतापगढ़, उ.प्र. पृष्ठ सं. १००

46

जगदीश चन्द्र के उपन्यासों में चित्रित पंजाबी शरणार्थियों और भूमिहीन किसानों की समस्याएँ

डी. लक्ष्मी, शोधार्थिनी,
हिन्दी विभाग, आन्ध्र विश्वविद्यालय,
विशाखपट्टणम् - 3 आन्ध्र प्रदेश।

ग्राम-चेतना प्रधान उपन्यासकार जगदीश चन्द्र ने किसानों, विशेषकर पंजाब के किसानों की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला है। शरणार्थियों के रूप में दुर्भर जीवन बितानेवाले किसानों की समस्याओं को सुलझाने की आवश्यकता एवं कर्तव्य की तीव्र उपेक्षा करनेवाली सरकार की नीतियों का जगदीश चन्द्र जोरदार खण्डन करते हैं। जगदीश चन्द्र जी के साहित्य में पंजाबी जीवन का पूरा सौन्दर्य नजर आता है। गाँव, गाँवों का सहजीवन, रहन-सहन, आचार-विचार, विश्वास-अंधविश्वास, जाति-प्रथा, भेदभाव, उदारता, जीवन संघर्ष, झगडे, मारपीट, प्रेम-अवज्ञा समाज मन का ऐसा एक भी कोना नहीं जो छूट गया हो। यह सही है कि उनके उपन्यास गाँव को लेकर ज्यादा संवेदनशील नजर आते हैं। कुछ उपन्यासों में फौजी जीवन के त्यागी रूप को प्रस्तुत किया है।

पंजाबी लोगों का मुख्य व्यवसाय खेतीबारी है। खेतीबारी के अलावा स्वभावत: दिलेर और बहादूर होने के कारण यहाँ के लोग सेना में भरती हो जाते हैं। गाँवों में चाय और कॉफी को प्रचलित करने में इनकी बडी भूमिका है। शहर के लोग धीरे-धीरे व्यापार, उद्योग धंधों तथा नौकरियों की तरफ आकर्षित होते चले गए। गाँवों में लोग संयुक्त परिवार में रहते हैं। घर का मुखिया अर्थात् बुजुर्ग निर्विरोध पूरे घर की व्यवस्था संभालता है परन्तु आजकल, विशेषकर शहरों में यह प्रथा समाप्त होती जा रही है।

धरती धन न अपना, कभी न छोडें खेत, मुट्ठी भर कौंकर तथा घास गोदाम में उपन्यासकार ने ईमानदारी के साथ कृषक वर्ग की समस्याओं का अंकन किया है और उनकी समस्याओं के मूल कारणों को भी स्पष्ट करते हुए किसानों की निर्धनता को दूर करने के पक्ष में मानवीय धरातल पर सोचने का आग्रह किया है। जगदीश चन्द्र सामाजिक व्यवस्था की गोद किसान की जिन्दगी के यथार्थ को व्यक्त करने में सतत प्रयासत रहते हैं। धरती धन न अपना, कभी न छोडें खेत, मुट्ठी भर कौंकर तथा घास गोदाम का किसान अपना- अपना भाग्य लेकर जीवित दिखाई पडता

स्व प्रमाणित

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

डॉ. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

स्व प्रमाणित

मॉरीशस में श्री राम कथा एवं भारतीय संस्कृति

162

ISSN 0975-119X
UGC-CARE GROUP I LISTED
वर्ष 12 अंक 6 नवंबर-दिसंबर 2020

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Referred Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

Globus Press
448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

स्व प्रमाणित

मॉरीशस में श्रीराम कथा एवं भारतीय संस्कृति

उमेश कुमार सिंह

Associate Professor, Department of Hindi and Comparative Literature, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills, Wardha-442001 (Maharashtra) Bharat

सारांश :- श्रीरामचरितमानस और श्रीराम कथा ने भारत में ही नहीं अपितु मॉरीशस की संस्कृति को भी एकरूप देने में ऊर्जा प्रदान की है। श्रीरामचरितमानस में वर्णित राम और सीता की कथा भारत के हिंदुओं के लिए अत्यंत अर्थपूर्ण होने के साथ-साथ अन्य देशों में बसे हिंदुओं और विद्वत समाज के लिए भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। आज श्रीरामकथा को वैश्विक आख्यान कह सकते हैं क्योंकि आज विश्व जनमानस के लिए श्रीरामचरितमानस और श्रीरामजी की कथा, आशा, विश्वास, और आस्था के प्रतीक पुण्य ग्रंथ के रूप में केन्द्रीय महत्व का विषय रखती है। आज श्रीरामकथा के प्रभाव के कारण मॉरीशस में भारतीय संस्कृति के विस्तार को गति प्राप्त हुई है।

प्रमुख शब्द/Key words :- संस्कृत-Culture, अर्थपूर्ण-Meaningful, लोकप्रियता-Popularity, बन्दरगाह-Harbor, परहित-Other benefit, आपद-Disaster, परखियों-To Judge, अभिमानी-Conceited, सुरसरि-Divine river, कुटिल-Crooked, भगिनी-Sister.

शोध प्रविधि/Research Methodology:- इसमें शोध पत्र लिखने के लिए तथा शोध को उसके अंतिम लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए आधुनिक आलोचनात्मक और समीक्षात्मक शोध प्रविधियों को प्रयोग किया जाएगा।

प्रवासियों ने श्रीरामचरितमानस के द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा, संस्कार, आस्था एवं विश्वास की रक्षा की है। श्रीरामचरितमानस और राम कथा ने भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण एशिया के साथ-साथ पश्चिम की दुनियाँ के देशों की संस्कृति को भी एकरूप देने में शक्ति प्रदान की है।

श्रीरामचरित मानस मे वर्णित राम और सीता की कथा भारत के हिंदुओं के लिए अत्यंत अर्थपूर्ण होने के साथ-साथ दूसरे देशों में बसे हिंदुओं और विद्वत समाज के लिए अर्थपूर्ण होने के साथ अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम आज रामकथा को वैश्विक आख्यान कह सकते हैं क्योंकि आज विश्व जनमानस के लिए श्रीरामचरितमानस और श्रीरामजी की कथा आस्था और केन्द्रीय महत्व का विषय है।

इस प्रकार श्रीरामचरितमानस आज पूरी दुनियाँ में फैले हुए हिंदुओं और विद्वत जन समाज जिनमें मूलरूप से भूटान, नेपाल, वर्मा, और प्रवासी गिरमिटिया देशों में मॉरीशस, फीजी, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद एंड टूबेगो, के साथ पाकिस्तान, बंगाला देश, संयुक्त राज्य अमरीका आदि तक के देशों फैली हुई है। इसके अतिरिक्त थाईलैंड, इन्डोनेशिया, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, कनाडा, यूरोप के अनेक देश सम्मिलित होते हैं। मेरी दृष्टि में इस तरह से श्रीरामचरित मानस और राम कथा वैश्विक आख्यान सिद्ध होने के गुण विद्यमान हैं।

डब्लू डगलस पी. हिल- हिल ने मानस की अंग्रेजी भूमिका के रूप में तुलसीदास के बारे में अनेक विचार व्यक्त किए हैं। भक्त सिंधु और वृहद रामायण के महात्म के अनुसार राजापुर के निकट हस्तिनापुर में, जनश्रुतियों के अनुसार चित्रकूट में, तथा रामनरेश त्रिपाठी के अनुसार सूकर क्षेत्र या सोरों में पैदा हुये थे। यह स्थान बांदा जिले में यमुना तट के निकट बसा हुआ है उनका जन्म 1532 में हुआ था।

तुलसीदास ने बृजभाषा त्यागकर अवधी में मानस की रचना की है। इसका कारण राम की कथा अवध में जन्मे श्रीराम की हो सकती है। उस दौर में और आज भी अवध जनपद की भाषा अवधी है। मेरी दृष्टि में श्रीरामचरितमानस सर्वोत्तम धार्मिक ग्रंथ है। जिसकी रचना चौतशुक्ल नवमी 1603 वि में हुई। जिसको तैयार करने में 2 वर्ष 7 महीने और 26 दिन लगे। यह ग्रंथ संवत 1633 (1576 ई.) में श्रीराम विवाह के दिन सम्पूर्ण हुआ था। गीता प्रेस गोरखपुर के हनुमान प्रसाद पोद्दार के द्वारा भी श्रीरामचरितमानस के पूर्ण होने की यही तिथि दी गई है। पोद्दार: सं.1633 श्रीरामचरितमानस, पृष्ठ सं.970।

प्रो बरान्नीकोव रूस के विद्वान हैं जिन्होने श्रीरामचरित मानस को रूसी भाषा में रूपान्तरण किया है। उनकी पुस्तक की भूमिका-भास का, हिंदी अनुवाद में, राहुल साकृत्यायन की दृष्टि में तुलसी हमारी हिंदी के ही नहीं, भारत के श्रेष्ठ कवि हैं। यही नहीं वह विश्व के गिने-चुने कवियों में से हैं। उनकी लोकप्रियता के बारे में कुछ कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। हिंदी-क्षेत्र की सीमा बतलाने के लिए यह कहना पर्याप्त है "जहां-जहां तुलसी की रामायण और उनका पद चलता है, वही हिंदी क्षेत्र है। तुलसीदास ने सबसे पहले हमारे देश के जन-साधारण के हृदय को जीता, जिससे स्पष्ट होता है, उनकी कृतियों में लोक-साहित्य का अद्भुत गुण देखा जा सकता हैं। आज तुलसी दास की कीर्ति-कौमुदी विश्व के अन्य सभ्य देशों में भी फैल चुकी है। आज श्रीरामचरित मानस को भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में बड़े भक्ति भाव के साथ पढ़ा सुना और भक्तिभाव के साथ गया जाता है।

मॉरीशस के लोगों ने अपने धर्म, संस्कृत एवं हिंदी की रक्षा एक मात्र श्रीरामचरित मानस के पठन-पाठन और अध्ययन अध्यापन से की थी। उस देश में बैठका का स्वरूप आज तक जीवित रूप में देखा जा सकता है। बैठका में 19 वीं शताब्दी के मध्य में भारत से दूर, हिंद महासागर में एक मोती के समान चमकता द्वीप लघु भारत/मॉरीशस है। गिरमिटिया आप्रवासी भारत से प्रवास के समय अपने साथ कुछ धार्मिक ग्रन्थों में श्रीरामचरित मानस, गीता, आल्हा आदि पुस्तकों के साथ भारत की मिट्टी नीम, नीबू, लीची, बरगद और पीपल के बीज इत्यादि अपने साथ लेकर गए थे। यह सब भरतवंशी पूर्वजों, पुरखों की यादें और उनकी दौलत थी।

स्व प्रमाणित

मॉरीशस वासियों ने एकमात्र पुस्तक श्रीरामचरित मानस से अपने देश को अंग्रेजों से स्वतंत्र ही नहीं करवाया अपितु उन्होने अपने धर्म, संस्कृत और हिंदी की रक्षा भी की थी। आज से 200 वर्ष पूर्व उन्होने एक नारा दिया था। हिंदी गई तो संस्कृत गई। इसके साक्ष्य 1934 में प्रकाशित दुर्गा नामक हस्तलिखित पत्रिका में देखे जा सकते हैं।

मॉरीशस के गिरमिटिया आप्रवासियों ने श्रीरामचरित मानस के एक बल और एक आस विश्वास के द्वारा अंग्रेजों के राज्य में असह्य पीड़ादायक यातनाओं का सामना करते हुए आज तक वहाँ हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृत, आस्था और विश्वास एवं आचार-विचारों को सहेजकर रखा है। आज वहाँ गिरमिटिया आप्रवासियों के वंशजों की पाँचवीं और छठी पीढ़ी निवास कर रही है।

भारत से गए गिरमिटिया पूर्वजों को श्रीरामचरित मानस के पाठ के द्वारा परदेश में सदैव आशा और विश्वास का संबल प्राप्त होता रहा। झोपड़ी के घरों में, तूफानों का सामना करते हुए, इसी उम्मीद में जीवन गुजार दिया, कभी तो बुरे दिन जायेंगे और शुभ दिन आएंगे। तुलसीदास श्रीरामचरित मानस में देश की जनता के पूर्ण सुख की कामना करते हैं। यह उनके विशाल हृदय के अतिरिक्त और कौन सोच सकता था। यह उनका विश्वास था। राम राज्य में छोटी अवस्था में मृत्यु नहीं होती, न किसी को पीड़ा होती है। सभी के शरीर सुंदर और नीरोग हैं। न कोई दरिद्र है, न दुखी है और न दीन ही है। न कोई मूर्ख है और न शुभ लक्षणों से हीन है।

"अल्प मृत्यु नहिं कवानिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना"[4]

गिरमिटिया आप्रवासी कुली मजदूरों को जहाज में अमानवीय ढंग से अंग्रेज भरकर मिरिच देश मॉरीशस ले गए थे। उन्हें पत्थर के नीचे सोना निकलने का धोखा देकर दिया था। उन दिनों भारतीय मॉरीशस को मारीच या मिर्च देश भी कहा करते थे। भारतीय मजदूरों की परेशानी जहाज बन्दरगाह छोड़ने के साथ से ही प्रारम्भ हो गई थीं। मार्ग की अनेक पीड़ाओं को सहन करते हुए यात्रा के दौरान एक दूसरे की परेशानियों में सहयोग करते हुए, एक दूसरे के जहाजिया धर्म भाई बन गए थे। दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है। दूसरों को दुःख पहुँचाने के समान कोई नीचता (पाप) नहीं है। इसे समस्त पुराणों और वेदों का निचोड़ (निश्चित सिद्धान्त) है। ज्ञानी और पंडित लोग इस बात को भली भाँति जानते हैं।

"पर हित सरिस धर्म नहि भाई । पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।।
निर्नय सकल पुरान बेद कर । कहेउ तात जानहि कोबिद नर।।"[5]

धीरज अर्थात धैर्य, पत्नी, मित्र और धर्म की सही परीक्षा उस समय ही की जा सकती है, जब व्यक्ति पर कोई विपत्ति आई हो। इनसान के अच्छे समय में तो हर कोई उसका साथ देता है किन्तु जो बुरे समय में साथ देता, सच में वही आपका सच्चा साथी और मित्र होता है। जीवन में सबसे ज्यादा भरोसा उसी इंसान पर करना चाहिए।

तुलसीदास श्रीरामचरितमानस में कहते है। धीरज, धर्म, मित्र और स्त्री–इन चारों की विपत्ति के समय ही परीक्षा होती है। वृद्ध, रोगी, मूर्ख, निर्धन, अंधा, बहरा, क्रोधी आदि अत्यंत ही दीन होते हैं।

"धीरज, धर्म, मित्र, अरु नारी, आपद काल परखिअहिं चारी।।
बृद्ध रोगबस जड़ धनहीना। अंध बधिर क्रोधी अति दीना।।"[6]

श्रीरामचरित मानस की कथा को वहाँ (सत्संग) अर्थात उस सत्संग में हरि कथा सुनी जाय, जिसे मुनियों ने अनेकों प्रकार से गाया और वाचन किया है और श्रीरामचरित मानस का आदि, मध्य और अंत में केन्द्रीय प्रतिपाद्य श्रीराम प्रभु ही हैं।

"सुनिअ तहाँ हरिकथा सुहाई । नाना भाँति मुनिन्ह जो गाई।।
जेहि महूँ आदि, मध्य, अवसाना। प्रभु प्रतिपाद्य राम भगवान"[7]
"तस मैं सुमुखि सुनावऊं तोही। समुझि परइ जस कारण मोही।।
जब जब होइ धरम कै हानी। बाढ़हि असुर अधम अभिमानी।।"[8]

इस प्रकार सर्वहित ही श्रीरामचरितमानस का एकमात्र लक्ष्य परिलक्षित होता है जिसके द्वारा हिन्दू असक्ति से, शक्ति की ओर, अशांति से शांति की ओर अग्रसर हुए हैं। तुलसीदास श्रीरामचरितमानस में राम कथा कहकर सबकी भलाई, सबके कल्याण का लक्ष्य मानने वाले कवि के रूप में उपस्थित हुए हैं। तुलसीदास कहते हैं जब जब धर्म ह्रास होता है उस समय नीच प्रवृत्ति और अभिमानी राक्षस बढ़ जाते हैं।

कीरत भनित भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कह हित होई
राम सुकीरति भनिति भदेसा असमंजस अस मोहि अंदेसा।।"[9]

विश्व में ऐसी कृतियाँ कम ही हैं जो सबके लिए समान रूप से प्रिय हों। गिरियर्सन ने श्रीरामचरित मानस को उत्तर भारत के लोगों के लिए बाइबल कहा था। यह ऐसा ग्रंथ है जो राजा के महल और भिकारी की कुटिया को समान रूप से सुशोभित करता रहा है, करता रहता है और सदैव करता रहेगा।

श्रीराम चित्रकूट सभा में सबसे पहले माता कैकेयी से मिलते हैं। उन्हें सारी बातों के लिए विधि, कर्म और काल को दोष देकर सांत्वना देते हैं। कुटिल कैकेयी मन ही मन ग्लानि (पश्चाताप) से गली जाती हैं। किससे कहे और किसको दोष दे। और सब नर नारी मन में ऐसा विचारकर प्रसन्न हो रहे हैं कि [अच्छा हुआ जानकीजी आने से] चार (कुछ) दिन और रहना हो गया है।

"गरइ गलानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई।।
आस मन आनि मुदित नर नारी। भयउ बहोरि रहब दिन चारी"।।[10]

दृष्टिकोण

तुलसीदास ने श्रीरामचरित मानस में चित्रकूट सभा का अद्‌भुत उल्लेख किया है। यह आध्यात्मिक सभा है हृदय की इतनी उदात्त वृतियां, एक साथ उद्‌भावना तुलसी के विशाल मानस में ही संभव थी। जहां राजा और प्रजा, गुरु और शिष्य, भाई और भाई, माता और पुत्र, पिता और पुत्री, श्वसुर और जमातृ/जमाई, सास और बहू, क्षत्रिय और ब्राह्मण, ब्राह्मण और शूद्र सभ्य और असभ्य के परस्पर व्यवहारों के प्रसंग उपस्थित हुये हैं।

"अनुज बधू, भगिनी सुत नारी। सुनु सठ सम कन्या ए चारी
इनहि कुदृष्टि विलोकहि जोई। ताहि बधें कछु पाप न होई।।"

आज के संदर्भ में गोस्वामी तुलसीदास की सबसे बड़ी प्रासंगिकता एक पंक्ति में सिद्ध की जा सकती है।

"तुम्हहि छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्ह के मन मांही
जननी सम जानहु पर नारी। धनु पराउ विष ते विष भारी"

आपको छोड़कर जिनके दूसरी कोई गति (आश्रय) नहीं है, हे रामजी आप उनके मन में बसिए जो पराई स्त्री को जन्म देने वाली माता के समान जानते हैं और पराया धन विष से भारी विष है। इस संदर्भ में पराई स्त्री को माता के समान और दूसरों के धन को विष से भी विषैला मानने और समझने पर आज उत्पन्न होने वाली सभी समस्याओं का अंत किया जा सकता है।

भारतवंशियों ने मॉरीशस में कैसे श्रीरामचरितमानस के द्वारा अपनी संस्कृति, भाषा और संस्कारों को बचाने में सफलता करने के साथ-साथ उन्होंने अपने देश को भी आजाद करवाया। भारतवंशियों को अधिक मजदूरी और पत्थर खोदकर सोना निकलने की बात कहकर धोखे से लाया गया था।

"सोनवा के खातिर गइली विदेशवा, गलि गैलन सोनवा सरीर" अपने दुख और असहनीय कराह, पीड़ा को व्यक्त करते हुये गिरमिटिया मजदूर भोजपुरी में कहता है। उनकी इस आत्मग्लानि, पीड़ा और संवेदना को वे ही समझ पा सकते हैं जिन्होने यह पीड़ा भोगी होगी। मैं और मेरे जैसे सभी जहाजिया भाई सोने के लिए विदेश आए थे। मुझे सोना तो नहीं मिला किन्तु अब मेरा सोने जैसा शरीर गल चुका गई। भारतीय जाति व्यवस्था-मॉरीशस में जाते समय जहाज की पीड़ा के द्वारा जहाजिया भाई बनकर मिट गई थी। उनके व्यावहारिक ज्ञान के रूप में जहाजिया भाइयों के साथ किसी न किसी रूप में हिंदी भाषा, उनके साथ आई थी। वे अपने साथ अपनी भाषा, अपनी संस्कृति और अपने धर्म ग्रंथ साथ लाये थे। उन धर्मग्रन्थों में रामचरित मानस, हनुमान चालीसा, संतनामा। कबीर की शाखियाँ, आल्ह खंड प्रमुख थे। यह उनकी धरोहर थी। इन्ही ग्रन्थों की भाषा मॉरीशस द्वीप में हिंदी के रूप में आई।

आज मॉरीशस देश में पर्यटन के रूप में जाने पर भारतीय संस्कृत, भारतीय धर्म और मंदिर, भारतीय परिधान/वेश-भूषा, भारतीय खान-पान, भारतीय रीति-रिवाज, तीज त्योहार एवं पर्व, गंगा स्नान चहुं ओर परिलक्षित होते हैं। हमारे पूर्वज मॉरीशस में शर्तबंद अथवा गिरमिटिया मजदूर के रूप में मॉरीशस में 1834 से लाने प्रारम्भ हुये थे, और यह सिलशिला 1945 तक जारी रहा था। यहाँ पर 19 वीं सदी का सबसे बड़ा विस्थापन हुआ था जिसमें 4 लाख पचास हजार मजदूरों का यहाँ लाकर बसाया गया था। आज मॉरीशस वासियों की जनसंख्या 14 लाख हो गई है। हमारे पूर्वज सामाजिक थे। वे दिन भर खेतों में कठोर परिश्रम करते थे और फिर शाम के समय सभी साथ मिलते थे, किस्सा- कहानियाँ सुनाते थे। यह जगह बैठका नाम से जानी जाती थी, एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था की तरह ही थी। जहां वे लोग एक दूसरे से मिलते थे। आज इसका परिणाम है।

मॉरीशस मे हर तरफ भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं। यहाँ भारतीय सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और परंपरा के अनुसार ही भारतीय त्योहार मनाए जाते हैं, पूजा-पाठ, कथा-वार्ता, यज्ञ-हवन आदि करते हैं। शादी व्याह रचाते हैं।

भारत वासियों की तरह ही पहनावा कुर्ता-धोती, साड़ी, सलवार सूट पहने नर-नारियां हर तरफ परिलक्षित होते हैं। ऐसा नहीं लगता है। हम भारत में नहीं हैं। होली दिवाली, महाशिवरात्रि गंगा स्नान, दुर्गा पूजा, आदि बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाये जाते हैं। आज उस समाज में भारतवंशियों की एक बड़ी विशेषता लड़की और लड़के की शादी में दहेज न लेना और देना कही जा सकती है।

मॉरीशस में गंगा स्नान से तात्पर्य समुद्र पर समुद्र स्नान से होता है। सभी हिन्दू छुट्टी लेकर नहाने जाते हैं और खूब परिवार के साथ एंजॉय करते हैं। समुद्रतट पर भारत की तरह ही छोटे-छोटे तम्बू लगाए जाते है और अपनी धोतियाँ बांधकर एक घेरा बनाते हैं। उसी में अपना खाना और कपड़े रखते है।यह सिलसिला शाम तक चलता है। शाम को सभी अपनी अपनी कार लेकर अथवा बस द्वारा घर की ओर प्रस्थान करते हैं।

मॉरीशस में गंगा तालाब पर आदमकद शिवजी की मूर्ति स्थापित की गई है। शिव रात्रि का उत्सव बड़े भक्ति भाव और धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। उस समय मॉरीशस मॉरीशस नहीं भारत का हिस्सा नजर आता है। गंगा तालाब पर ही विशालकाय शेरावाली दुर्गा की मूर्ति स्थापित की गई है। शिव मंदिर और हनुमान मंदिर प्रत्येक गाँव में, प्रत्येक घर में बनाया जाता है। और उस पर ध्वजा लगीई जाती है। होली के उत्सव के अवसर पर होली मिलन का आयोजन किया जाता है। शनि मंदिर, गणेश मंदिर, भोजपुरी और दाल-पूरी मिलती है। श्रीराम मंदिर, श्रीकृष्ण मंदिर, श्रीहरेकृष्ण मंदिर भी स्थापित किए गए हैं।

मॉरीशस में बोली जाने वाली भाषाएँ- हिंदी, भोजपुरी, मराठी, तमिल तेलगू, भाषा के साथ इंग्लिश, फ्रेंच, चीनी, अफ्रीकी आदि भाषाएँ बोली जाती है क्रिओल भाषा बहुतायत में बोली जाती है। प्रत्येक भाषा- भाषी समूह के अपने मंदिर, और बैठका हैं। प्रत्येक भाषा के शिक्षक हैं, वहाँ पर बहुत से तमिल स्थापत्य के मंदिर भी हैं।

प्रथम पत्र हिंदुस्तानी नाम से 1909 में हिंदी और अंगेजी में प्रकाशित हुआ। इस देश में स्वास्थ्य और शिक्षा निशुल्क प्रदान की जाती हैं। प्रत्येक 60 वर्ष पूर्ण करने के बाद राष्ट्रपति और आम नागरिक को 6000 पेंशन प्रदान की जाती है।

हिंदी बैठका का इतिहास भी भारतीयों की तरह ही बहुत पुराना है। पहले हिंदी की पढ़ाई बैठका में होती थी, जिसका आगे चलकर पाठशाला नाम से कहने लगे। वहीं सायकाल में हिंदी की पढ़ाई होती थी। जहां बैठका नहीं होती थी, वहाँ बच्चे पेड़ों के तले बैठकर हिंदी सीखते थे। बैठका के अतिरिक्त 253 हिंदी स्कूल हैं। जो सरकार चलती है। मॉरीशस में आर्यसभा की स्थापना 1903 में हुई। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के कहने पर भारत से मणिलाल डॉक्टर मे मॉरीशस में गए थे। उन्होने भारतियों कि मदद कि तथा एक हिंदी पत्र हिन्दुस्तानी प्रकाशित किया था। आर्यसभा मॉरीशस द्वारा भी हिन्दी की चर्चा

स्व प्रमाणित

रेडियो मॉरीशस से प्रसारित की जाती है। आप्रवासी घाट जब हमारे पूर्वजों ने जब मॉरीशस में पहला कदम रखा था। उस स्थान को आप्रवासी घाट के रूप में उस स्थान को पूर्वजों की याद के रूप में सहेजकर रखा गया है। और प्रति वर्ष गिरमिटिया वंशजों की संताने अपने पूर्वजों को 2 नवंबर को याद करती हैं। तथा प्रतिवर्ष उनकी आत्मा की शांति के लिए यज्ञ किया जाता है। यह कार्यक्रम सरकार द्वारा आयोजित किया जाता है। गंगा तालाब कैसे बना यह बड़ी और विशिष्ट बात है। मॉरीशस के सबसे ऊंचे भाग पर ज्वालामुखी का क्रेटर था। ज्वालामुखी प्रतप्राय था। उसमें हवन करके और भारत की गंगा नदी से गंगाजल ले जाकर उसमें डाला गया था। उसके बाद उसका नामकरण गंगा तालाब के रूप में किया गया। मॉरीशस वासी भक्तिभाव के साथ पूरे देश के लोग बूढ़े और बच्चे सभी पैदल यात्रा करते हैं। जल भरकर लाते हैं। और अपने गाँव के शिव मंदिर में जलाभिषेक करते है। शिव रात्रि के अवसर पर पाँच दिन तक इस दौरान पूरे देश में भक्तिमय माहौल रहता है। लोग-खाने के लिए मुफ्त में भोजन, फल, मिनरल वॉटर की बोतल और सोने के लिए स्थान उपलब्ध करवाते हैं। मॉरीशस गीत गवाई को यूएनओ द्वारा मान्यता: मैं जब मॉरीशस में 2016 में पहुंचा था। उसी वर्ष 2016-17 में गीत गवाई को संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन. ओ) द्वारा राष्ट्रीय धरोहर के रूप में मान्यता दी गई थी। यह भारत और मॉरीशस दोनों देशों के लिए गर्व की बात है। यह भारतीय संस्कृति का रूप है। असल में गीत गवाई भारत में शादी विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले संस्कार गीत ही हैं। यह भारत के पूर्वजों के वंशज स्त्रियों द्वारा मौखिक परंपरा के रूप में आज तक याद करके और सहेजकर रखा गया है।

निष्कर्ष :- श्रीरामकथा की ज्ञानबेल के प्रकाश पुंज की सामर्थ्य के फलस्वरूप मॉरीशस में अपनी संस्कृति और परंपरा की रक्षा के लिए प्रथम पहल श्रीरामचरितमानस एवं दुर्गा हस्तलिखित पत्रिका में "हिंदी गई तो संस्कृति गई" को मातृ भाषा का ज्ञान अतिआवश्यक समझकर ही श्रीरामचरितमानस के पाठ से हिंदी पाठ का सुभारंभ किया था।

यह सोचकर उन्होने मॉरीशस की विपरीत संस्कृति वाले देश में 'बैठका' का निर्माण किया था। हमारे पूर्वज उसी बैठका में श्रीरामचरितमानस का पाठ और सत्संग बड़े भक्ति भाव के साथ किया करते थे तथा उसी स्थान पर हिंदी पठन-पाठन की व्यवस्था हुआ करती थी। मॉरीशस के बैठका में बच्चे, युवा, वयस्क एवं वृद्ध सब हिंदी उत्सुकता के साथ पढ़ना अपना सौभाग्य समझा करते थे। मॉरीशस में भारतीय त्योहार, पर्व, जन्मोत्सव, मुंडन, विवाह संस्कार, अन्त्येष्टि संस्कारों का पालन बड़े विधि विधान के साथ किया जाता है। इसी का परिणाम है कि भारतवंशियों में आस्था, विश्वास, संस्कार, परम्पराएँ आदि उस देश में प्रचलित ही नहीं हैं, अपितु खूब फल फूल रही हैं। आज भी मॉरीशस, में सभी छात्र एवं छात्राओं के पठन-पाठन की व्यवस्था आर्यसमाज तथा प्रवासी गिरमिटिया देशों की सरकारों द्वारा की जाती है। इस शोध पत्र को पूर्ण विराम तुलसीदासजी के शब्दों में अधोलिखित श्रीरामचरितमानस के दोहा से करना सौभाग्यशाली प्रतीत होता है। जिसका भावार्थ अर्थ इस प्रकार है। चौरासी लाख योनियों में चार प्रकार के (स्वेदज, अंदाज, उद्भिज्ज जरायुज) जीव जल थल पृथ्वी और आकाश में रहते हैं उन सबसे भरे हुये इस सारे जगत को श्रीसीताराममय जानकार मैं दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम कर शोध पत्र शोध पत्र और वाणी को विराम देता हूँ। (पद:1 पृष्ठ 11)

"आकर चार लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी।
सीया राममय सब जग जानी। करऊँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।"[10]

संदर्भ (Bibliography) :-

1. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049,पृष्ठ सं 854
2. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 871
3. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 573
4. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 887
5. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 110
6. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 18
7. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 522
8. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 पृष्ठ सं 623
9. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 चौपाई 129, पृष्ठ सं.410
10. श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर , 2049 उनहत्तरवाँ संस्क सं 2049 , गोविंद व्हावान, गीता प्रेस, गोरखपुर-273005, सटीक मझला संस्कारण, पृष्ठ सं 11
11. युगेश्वर, तुलसी काव्य की भूमिका, साहित्य भंडार 50 चहचन्द, इलाहाबाद वर्ष 2001
12. रामचन्द्र शुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 वर्ष 2008
13. जनार्दन उपाध्याय, तुलसी काव्य में साहित्यिक अभिव्यक्ति, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद वर्ष 2007
14. डॉ शिवप्रिय महापात्र, तुलसी आज के संदर्भ में, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली-110002, वर्ष 2009.

ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
DIS
शोध सरिता
January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 47-51
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

हिंदी साहित्य में स्त्री पर श्रेष्ठतम काव्य गोपी विरह वेदना

डॉ0 उमेश कुमार सिंह*

शोध सारांश

विरह वियोग को दुःख की अवस्था में अत्यंत वेदनीय माना गया है। इसे अन्य शब्दों में संयोग के सुख के अभाव को विरह की दुःखद एवं पीड़ादायक स्थिति कहा जा सकता है। दुख की परिभाषा के अनुसार सर्वशामेव प्रतिकूल वेदनीय दुखम अर्थात सबकी प्रतिकूल बातों को दुख कहते हैं। वियोग में पीड़ा का अधिक प्राधान्य होता है। इस कारण वियोग का काव्य संयोग की अपेक्षा अधिक भावपूर्ण एवं मार्मिक होता है। गोपियों को श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर विमुख होने बिछुड़ जाने पर अत्यंत दुख हुआ होगा। आज शताब्दियों बाद विश्व महामारी के कोरोना काल में अपनों से बिछुड़ने का दुख आज के मानव ने बहुत बड़ी संख्या में रोते बिलखते सिसकते तड़फते हुये प्रत्यक्ष अपनी आँखों के सामने घटते देखा है। इस दुख से कम गोपियों का दुख श्रीकृष्ण से बिछुड़ने पर कम नहीं हुआ होगा। भ्रमरगीत में मात्र गोपियों के विरह वर्णन अर्थात नारी की मर्मांतक वेदना को चित्रित किया गया है। विश्व साहित्य में नारी की विरह वियोग वेदना का सजीव वर्णन एवं उतक्रष्टतम रस के महत्व की दृष्टि से विशिष्ट अद्वितीय एवं उल्लेखनीय है।

Keywords: रूपरसराची – रूप के रस में पगी हुई, राजपथ – राजपथ के समान प्रशस्त और बढ़ा, रहित काँपो – कंपानोक पर लासा लगा हुआ, परसत् – स्पर्श करते ही, मदन सरघाती – कामदेव के बाणों के समान घातक, हरिस्रम जल – कृष्ण के साथ की गई प्रेम क्रीडाओं के समय शरीर से निकाला हुआ पसीना, अंतर तनु – हृदय और शरीर।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र में समीक्षात्मक तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक पद्धति के आधार पर सूरदास द्वारा रचित गोपी विरह के बारे में शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जाएगा।

विश्वसाहित्य में स्त्री पर केंद्रित अतुलनीय साहित्य की रचना की गई है जिस में काव्य में कवि जायसी के नागमती विरह वर्णन के अतिरिक्त संदेश रासक अपभ्रंस में एवं मेघदूत संस्कृत जैसी रचना देखी जा सकती हैं किन्तु स्त्री विरह वर्णन पर केंद्रित अद्भुत काव्य की रचना करने वाले महाकवि अतिविशिष्ट एवं अभूतपूर्व कवि हैं जिंहोने स्त्री पक्ष लेते हुए गोपियों के मुख से उनके के समर्थन एवं सगुण भक्ति के पक्ष में अद्भुत अनेक तर्क प्रस्तुत किए हैं। सूरदास रचित भ्रमरगीतसार में अद्वतीय नारी की विरहण्वेदना को चित्रित किया है। वियोग वेदना का सजीव वर्णन उतक्रष्टतम रस के महत्व की दृष्टि से विशिष्ट एवं उल्लेखनीय है। इस बात की पुष्टि आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में की है सूरसागर का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध अंश भ्रमरगीत है जिसमें गोपियों की वचन वक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। ऐसा सुंदर उपालंभ काव्य और कहीं नहीं मिलता।1 गोपियों के उद्धव से अद्भुत वाकचातुर्य के द्वारा परास्त करने के साथ साथ निर्गुण पर श्रीकृष्ण से अनन्य और एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाते हुये सगुण की विजय अर्थात जीत को प्रदर्शित किया गया है।

लरिकाई को प्रेम कहौ अलि कैसे करिकै छूटत,
कहा कहौं ब्रजनाथ चरित अब अंतरगति यों लूटत
चंचल चाल मनोहर चितवनि वह मुसुकानि मंद धुनि गावत।2

गोपियाँ और श्रीकृष्ण का प्रेम लड़कपन से रहा है। बचपन अथवा लड़कपन का प्रेम गहराए निस्वार्थ और एकनिष्ठ माना जाता है। इसको मनुष्य मात्र के लिए भुलाना अत्यंत मुश्किल होता है। गोपिकाएँ इसी साहचर्य प्रेम की एकनिष्ठता का उल्लेख करती हुई कह रही हैं। हे उद्धव यह बताओ कि बचपन में साथ साथ रहने से उत्पन्न हुआ प्रेम किस प्रकार टूट अथवा छूट सकता है। ब्रिजनाथ अर्थात श्रीकृष्ण के चरित्र एवं प्रेम क्रीड़ाओं का कहां तक वर्णन करें। हम अब उनके चरित्रों का स्मरण आते ही अपनी सुध बुध भूल जाती हैं। उनकी चंचलता से भरी चाल वह मनोहर चितवन एवं मोहन मुस्कान और मंद स्वर में गाना कभी विस्मृत नहीं होता है।

*एसोसिएट प्रोफेसर – हिंदी विभाग एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र भारत

स्व प्रमाणित

हरि काहे के अंतर्यामी
जौ हरि मिलत नहीं यहि औसर अवधि बतावत लामी।।
अपनी चोप जाय उठि बैठे और निरस बेकामी।
जो कह पीर पराई जानै जो हरि गरुड़ागामी।।3

गोपियां उद्धव से प्रश्न कर रही हैं कि हरि कैसे अंतर्यामी हैं, कैसे सबके हृदय की बात जानते हैं, वे क्या इस अवसर पर हमारे विरह में अत्यधिक व्याकुल होने पर आकार मिलते नहीं हैं एवं बहुत समय बाद मिलने का संदेश भेजते रहते हैं। उनके हृदय में हमसे मिलने की कमाना ही नहीं रही है। वे गरुड पर सवारी करने वाले हैं कभी पैदल नहीं चलते हैं वे पैदल चलने वालों के पैरों में फटी हुई बिवाइयों के कष्ठ और पीड़ा को क्या जानें।

अपने स्वारथ को सब कोऊ।
चुप करि रहौ मधुप रस लंपट ! तुम देखें अरु बोऊ।।
औरौ कछू संदेस कहन को कह पठयो किन सोऊ।
लीहै फिरत जोग जुवतिन कौं बड़े सयाने दोऊ।।4

गोपियां खीजकर दुखी मन से जली कटी बात सुना रही हैं। हे उद्धव इस संसार में सब अपने स्वार्थ को देखने के अतिरिक्त दूसरों की कोई चिंता नहीं करता है। रस लोभी लंपट मधुप तुम अब चुप रहो और अधिक बातें मत बनाओ। हमने यअर्थात गोपियों नेद्ध तुम्हें और उनको अर्थात श्रीकृष्ण को खूब देख परख लिया है। तुम दोनों ही एक समान स्वार्थी हैं। श्रीकृष्ण ने यदि तुम्हें हमारे पास कुछ संदेश कहने के लिए भेजा होए तो उसे भी क्यों नहीं कह डालते हैं। तुम भी हम युवतियों के लिए योग संदेश दे रहे हो और उन्होंने भी तुम्हें यही संदेश देने के लिए भेजा है।

अंखियाँ हरि दरसन की भूखी।
कैसे रहैं रूपरसरांची ये बतियाँ सूनि रूखी।।
अवधि गनत इकटक मग जोवत तब एती नहीं झूखी।5

गोपियाँ उद्धव से कह रही हैं हमारे नयन श्रीकृष्ण के दर्शनों की भूखे हैंए हमारी आँखें श्रीकृष्ण के रूप और उसके रस में पगी और अनुरक्त हैं। तुम्हारे योग की नीरस बातें सुनकर कैसे धैर्य धारण करें। हमारी ये आँखें श्रीकृष्ण के लौटर आने की अवधि का एकएक दिन गिनती हुई टकटकी बांधे मार्ग की ओर देखा करती रहती थीं। उस समय भी इतनी अधिक संतप्त नहीं हुई थीं किन्तु तुम्हारे इस योग संदेशों को सुनकर एकदम व्याकुल और दुखी हो उठी हैं

हमारे हरि हारिल की लकरी।
मन बच क्रम नंदन सों उर यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत सोवत सपने सौंतुख कान्ह कान्ह जेंक री।
सुनतहि जोग लागत ऐसों अलि! ज्यों करुई ककरी।।6

गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रति अपने अटूट प्रेम को प्रदर्शित करते हुये कहती हैं। हमारे लिए श्री कृष्ण हारिल पक्षी की लकड़ी की तरह बन गए हैं, जैसे हारिल पक्षी किसी भी दशा में होने पर अपने पैरों में लकड़ी अथवा किसी तिनके को पकड़े रहता है। उसी प्रकार हम भी निरंतर श्रीकृष्ण का ही ध्यान करती रहती हैं। हमने मनए वचन और कर्म से नन्दन रूपी लकड़ी अर्थात कृष्ण के रूप और उनकी स्मृति अपने मन द्वारा कसकर पकड़ ली है। अब उनसे हमें कोई भी नहीं छुड़ा सकता है। हमारा मन जागते सोते और स्वप्न में सदैव श्रीकृष्ण श्रीकृष्ण की रटन लगाए रहता है।

निरखत अंक स्यामसुंदर के बारबार लावति छाती।
लोचन जल कागद मसि मिलि कै ह्वै गइ स्याम स्याम की पाती।।

गोकुल बसत संग गिरिधर के कबहुँ बयारि लगी नहिं ताती।7

गोपियाँ श्रीकृष्ण की पत्री को देखकर भाव विह्वल हो उठी हैं सूरदास गोपियों की इस भाव विह्वल दशा का चित्रण कहते हुये कहते हैं। कि श्यामसुंदर के पत्र में लिखे अक्षरों को निरख निरखकर गोपियाँ बार बार उस पत्र को स्नेह भाव विह्वल होकर अपनी छाती से लगा लेती हैं। प्रेम की अधिकता के कारण उनके नेत्रों से इस अवसर पर निरंतर अश्रुवर्षा हो रही है। नेत्रों का जल आँसू एवं उस पत्र के कागज पर लिखे काली स्याही के अक्षर आपस में मिलने के कारण श्याम का पत्र काले रंग का हो गया है। गोपियों के लिए पत्र ही श्याम बन गए हैं। उस पत्र के दृश्यावलोकन से गोपियों के मन में पूर्वकाल की स्मृतियाँ याद आने लगीं हैं। गोपियाँ जब गोकुल के गिरधर कृष्ण के साथ रहती थीं तब उन्हें कभी हवा का गरम होने का अहसास नहीं हुआ। अर्थात कभी कोई कष्ट नहीं हुआ था।

रहु रे मधुकर! मधुमतबारे।
कहा करौं निर्गुण लै कै हौं जीवहु कान्ह हमारे।।
लोटत नीच परागपंग में पचत न आपु सम्हारे।
बारम्बार सरक मदिरा की अपरस कहा उधारे।।8

गोपियाँ अपने इष्ट श्रीकृष्ण के प्रति अपना अनन्या प्रेम एवं निष्ठा को भ्रमर की उछ्ड्खलता से तुलना करते हुए कह रही हैं रे मधु के प्रेम में दीवाने रहने वाले मधुप भ्रमर ठहर जा। चुप रह। हम तेरे निर्गुण ब्रह्म को लेकर क्या करें। हमारी तो बस यही कामना है कि हमारे श्रीकृष्ण सदैव चिरंजीवी हों। तू तो सदैव पुष्पों के पराग की कीचड़ में लोटता रहता है कष्ट उठता है और नशे में मस्त होकर सुध बुध खो बैठता एवं गिरता पड़ता है। तू बार बार उसी मदिरा का सेवन करता रहता है। तुम अपने रहस्यों को स्वयं क्यों उघाड़ते फिरते हो क्यों कि नीरस और घिनोनी बातें उखाड़ने से लाभ कम और हानि अधिक होती है।

बिलग जनि मानौ हमरी बात।
डरपति बचत कठोर कहति मति बिनु पति यों उठि जात।।
जो कौउ कहत जरै अपने कछु फिरि पाछे पछितात।9

गोपियाँ उद्धव को अपनी जलीण्कटी सुनाने के पश्चात अपनी करनी पर पश्चाताप करके कह रही हैं। हे उद्धव तुम हमारी बात का बुरा मत मानो। हमें तुमसे कठोर बातें करते हुये डर

स्व प्रमाणित

लगता है क्योंकि विवेकहीन बातें करने से व्यक्ति की मर्यादा उसी प्रकार नष्ट हो जाती है जिसप्रकार तुम्हारी हो गई है क्योंकि तुम हमसे साक्षात श्रीकृष्ण के प्रेम को त्यागने और निर्गुण ब्रह्म की उपासना करने के लिए कह रहे होए यदि हमने अपने मन जलने एवं पीड़ित होने पर कुछ ऊट पटांग बातें कह भी दी हैं तो उसके लिए मन पछताता रहता है। तुम्हारी दुखदायी बातें सुनकर हमारे मुख से कठोर वचन निकल गए हैं उनका हमें पश्चाताप हो रहा है।

काहे को रोकत मारग सूधो
सुनहु मधुप ! निर्गुण–कंटक तें राजपथ क्यों रूधों
कै तुम सिखै पठाए कुब्जाए कै कही स्यामघन जू धों
वेद पुराण सुमृति सब ढूँढ़ौ जुवतिन जोग कहूँ धों
ताको कहा परेखो कीजै जानत छाछ न दूधो। 10

प्रस्तुत पद में गोपियाँ उद्धव से निर्गुण ब्रह्म के बारे में मनोरंजक प्रश्न पूंछती हुई उन पर व्यंग कर रही हैं। गोपियाँ भ्रमर को इंगित करते हुए पूछती हैं। हे मधुप तुम्हारा निर्गुण किस देश का रहने वाला है। हम तो मात्र अपने आराध्य श्रीकृष्ण का निवास जानती है। हम तुम्हें अपनी कसम देकर पूंछ रही हैं तुम अपने प्रशन्नचित्त मन से समझा दीजिए उनके कौन माताण्पिता हैं एवं उनकी पत्नी और कौन दासी उनकी सेवा करती है। उनका रूप रंग एवं वेश भूषा कैसी है और उन्हें कैसा रस अधिक प्रिय है क्योंक ब्रह्म को सम्पूर्ण संबंधो एवं विशेषताओं से रहित बताया गया है।

निर्गुण कौन देस को बासी
मधुकर! हँसि समुझाय सौंह दै बूझति साँच न हाँसी।।
को है जनक जननि को कहियत कौन नारि को दासी
कैसों बरन भेस है कैसों केहि रस कै अभिलासी।।11

प्रस्तुत पद में गोपिया अपनी वाक पटुता के अनुसार उद्धव को छकाते हुये शशर्त निर्गुण ब्रह्म को स्वीकार सकती हैं। वे कहती हैंए तुम अपने ब्रह्म को हमें मुकुट और पीताम्बर वस्त्र धारण किए हुये दिखला दो अर्थात निर्गुण ब्रह्म श्रीकृष्ण के वेश को धारण करके हमारे समक्ष आए। तो हम उसे स्वीकार कर लेंगी। ऐसा होने पर हम सभी गोपियाँ निर्गुण का ही भजन करने लगेंगी। इसके लिए हमें संसार से गाली ही क्यों न खानी पड़ें।

प्रीति करि दीन्ही गरे छुरी।
जैसे बधिक चुगाय कपटकन पाछे करत बुरी।।
मुरली मधुर चेंप कर काँपो मोरचन्द्रठटवारी।
बंक बिलोकनि लूक लागि बस सकी न तनहिं सम्हारी।। 12

सूरदास द्वारा रचित पद में गोपियाँ कह रही हैं श्री कृष्ण ने पहले हमसे प्रगाड़ प्रेम करके के बाद में हमारे गले पर छुरी चला दी है, हमारी हत्या सी कर दी है। उन्होने हमसे ऐसा व्यवहार किया है जैसे बहेलिया पहले कपट कर पक्षियों को चुगने के लिए दाना डालता है। और फिर उन्हें पकड़कर उसकी बुरी गति करता है अर्थात श्री कृष्ण ने पहले हमें अपने प्रेम के कपट जाल में फँसाने के बाद वियोग में तड़फता हुआ छोड़कर मर्मांतक पीड़ा देने पर तुले हुए हैं। उन्होने मुरली के मधुर स्वर रूपी लासा अपने हाथ रूपी बांस पर लगाकर कंपा बनाया है और फिर मयूर पंखों के मुकुट कि टटिया बनाकर उसके पीछे छिपकर इम गोपियों रूपी चिड़ियों को अपने प्रेम जाल में फांस लिया है और अपनी तिरछी चितवन द्वारा हमारे हृदय में प्रेम कि दहकती ज्वाला सी फूँक दी है। प्रेम कि इस ज्वाला के कारण हम अपनी सुधण्बुधि खो बैठी हैं। और विवश पक्षी कि तरह श्रीकृष्ण रूपी बहेलिये के पूर्णतः वश में हो गई हैं।

कोउ ब्रज बांचत नाहिंन पाती।
कत लिखि लिखि पठवत नंदनंदन कठिन बिरह की काती।।
नयन सजल कागद अति कोमल कर अंगुरी अति ताती।
परसत जरै बिलोकत भीजै दुहूँ भाँति दुख छाती।।13

प्रस्तुत पद में गोपियाँ कहती हैं इस ब्रज में कोई भी श्रीकृष्ण द्वारा भेजी हुई पत्री को नहीं पड़कर सुना रहा है। हमारे नन्द नन्दन दुखदायी विरहावस्था में जाने क्यों परीक्षा ले रहे हैं। पत्री को पढ़वाने में और अधिक कष्ट हो रहा है। हमारे नेतों में आँसू भरे हुये हैं। और विरहाग्नि के कारण हमारे हाथ कि अंगुलियाँ गरम हो रही हैं। हम अंगुलियों से पाती छूते ही जलने लगती है। नेत्रों से इस ओर देखती हैं तो आँसू गिरने से भीग जाती है। इन दोनों दशाओं में इसे पढ़ न सकने के कारण हमारे हृदय को अत्यधिक पीड़ा हो रही है।

बिन गोपाल बैरनि भइं कुंजै।
तब ये लता लगति अति सीतल अब भईं विषम ज्वाल की पुंजै।।
वृथा बहति जमुना खग बोलत बृथा कमल फूलै अलि गुँजै।।
पवन पानी घनसार संजीवनि दाधिसुत किरण भानु भइं भुंजै।।14

इस पद में गोपियाँ अपने विरह की पीड़ा दायक स्थिति में गोपाल के बिना अर्थात श्रीकृष्ण के अभाव में कुंजें अब क्यों शत्रु के समान दुख पहुंचा रही हैं। इन्हें देखकर श्रीकृष्ण की अधिक याद सता रही है। जब श्रीकृष्ण हमारे साथ गोकुल में थेए तब ये लताएँ हमें अत्यंत शीतल प्रतीत होती थीं। अब उनके अभाव में भयंकर ज्वालाओं की लपटों के समान प्रतीत हो रही हैं। अब यह यमुना वृथा बहती है पक्षी वृथा कलरव करते हैं कमल के पुष्प वृथा खिलते हैं और उनपर भ्रमर व्यर्थ गुंजार करते हैं अर्थात इस सब सबको देखकर दुख उत्पन्न हो रहा है।

संदेसनि मधुबन कूप भरे।
जो कोउ पथिक गए हैं ह्याँ ते फिरि नहिं अवन करे।।
कै वै स्याम सिखाय समोधेए कै वै बीच मरे 15

प्रस्तुत पद में गोपियाँ अपनी व्यथा कह रही हैं हमने इतने संदेश लिख लिखकर भेजे हैं कि मथुरा के शायद कुएं भी भर गए होंगे किन्तु एक का भी उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। गोकुल से जितने भी पथिक मथुरा गए हैं उनमें से एक भी वापस लौटकर वापस नहीं आया है। हमें ऐसा संदेह होता है कि श्रीकृष्ण ने उन्हें समझा बुझाकर लौटने नहीं दिया है। अथवा वे कहीं बीच में म्रत्यु को प्राप्त हो गए हैं। नंदनंदन अपना संदेश नहीं भेजते हैं और हमारे संदेशों को भी अपने पास ही रख लेते हैं।

उर में माखांचोर गड़े।

अब कैसेहु निकसत नहिं ऊधो! तिरछे ह्वै जो अड़े।।

जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छौंड़े। 16

गोपियाँ कह रही हैं। हमारे ह्रदय में माखनचोर अर्थात श्रीकृष्ण की मनभावन छवि मूर्ति गढ़ गई है उसे कितना भी प्रयास करें, किन्तु बाहर निकलती नहीं सकती है। उनकी माधुरी मूर्ति त्रिभंगी अर्थात ह्रदय में तिरछी होने के कारण गढ़ कर फंस गई है। हम किसी भी स्थिति में श्रीकृष्ण को भूलकर तुम्हारे निर्गुण ब्रह्म को अपने ह्रदय में धारण नहीं कर सकती हैं यद्यपि श्रीकृष्ण यशोदानंदन जाति के अहीर हैं फिर भी हम उन्हें नहीं छोड सकती हैं।

उपमा एक न नैन गही।

कबिजन कहत कहत चलि आएए सुधि करि करि काहू न कही।।

कहे चकोर मुख बिधु बिनु जीवनए भँवर न तहँ उड़ि जात।

हरिमुख दृकमलकोस बिछुरे तें ठाले क्यों ठहरात

खंजन मनरंजन जन जौ पै कबहु नाहिं सतरात।

पंख पसारि न उड़त मंद ह्वै समर समीप बिकात।।17

इस पद में गोपियाँ अपने नेत्रों के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कह रही हैं कि इन नयनों ने कविगणों द्वारा दी गई एक भी उपमा ग्रहण नहीं की है।

कवि प्राचीन काल से पशुण्पक्षियों आदि की उपमा देते चले आए हैं किन्तु किसी ने सोच विचार कर अच्छी उपमा नहीं दी है जो हमारे नेत्रों के पर उचित बैठ जाती। कवियों ने नेत्रों को चकोर के समान कहा किन्तु हमारे नेत्र तो श्रीकृष्ण के चंद्रण्मुख के बिना अभी तक जीवित हैं।

इसी प्रकार भ्रमरए खंजन एवं मृग आदि की उपमा दी है किन्तु यह सभी उपमाएँ उन्हें जँचती नहीं है अर्थात श्रीकृष्ण के विरह के वियोग में गोपियों को कुछ भी नहीं भाता है। विरह की स्थिति को कोई विरही ही जान सकता है।

अति मलीन वृषभानुकुमारी।

हरिण्स्रमजल अंतरण्तनु भीजे ता लालच न धुआवति सारी।

अधोमुख रहित उरधनहिं छितवति ज्यों गथ हारे थकित जुआरी। 18

बृषभानु कुमारी अर्थात श्री राधा जीए श्रीकृष्ण के विरह में अत्यंत मलीन रहने लगी हैं। वह अपने वस्त्रों को साफ नहीं करती एवं मैली साड़ी पहने रहती हैं। इसका कारण श्रीकृष्ण के साथ केलि क्रीडा करते समय प्रेमवेश के कारण कृष्ण के शरीर से निकले हुये पसीने से राधा का सर्वांग और साड़ी भीग गई गई। वह सदैव नीचा मुख किए उन्ही पूर्व मधुर स्मृतियों में खोई बैठी रहती हैं। कभी मुख उठाकर ऊपर नहीं देखती हैं। राधा भी अपना सर्वस्व श्री कृष्ण को अर्पित कर लुटी हुई सी उदास बैठी रहती हैं।

निष्कर्ष : सूरदास ने गोपियों के विरह वर्णन को अद्भुत वाकचातुर्य से करना मेरी दृष्टि में नारी विमर्श की प्रथम अवस्था कही जा सकती है अथवा इसे सूर की सगुण कृष्ण भक्ति भावना भी माना जा सकता है जिसमें सूरदास पूरी तरह से गोपियों के साथ एवं पक्ष में खड़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं। भ्रमरगीत में सूरदास ने जिन पदों की रचना की है उनमें गोपियों ने श्रीकृष्ण को स्मरण करते रहने और अपने सगुण मार्ग के नियम से विचलित न होने अर्थात प्रत्येक स्थिति में सगुण मार्ग पर चलना एवं उससे विचलित न होते हुये निर्गुण ब्रह्म का पूरी तरह बहिष्कार करती हैं।

उनमें विशेष रूप से गोपियों का लड़कपन का प्रेम निस्वार्थ और एकनिष्ठ होता है जिसे भुलाना अत्यंत मुश्किल होता है श्रीकृष्ण का गोपियों के अतिव्याकुल होने पर भी न मिलनाए उद्धव को दुखी मन से जली कटी सुनना गोपियों की आँखों का श्रीकृष्ण के दर्शनों की लालसा होना श्रीकृष्ण गोपियों के लिए हारिल की लकड़ी के समान उपयोगी होना गोपियों का श्रीकृष्ण के निवास को ही जानना और निगुण ब्रह्म का तिरस्कार करनाए असंभव निर्गुणण्ब्रह्म को श्रीकृष्ण के वेश में मुकुट और पीताम्बर वस्त्र रूप में ग्रहण करना गोपियों के श्रीकृष्ण उनके गले पर छुरी चलानाए गोपियों द्वारा श्रीकृष्ण की पत्री को कृष्ण रूप में मानना श्रीकृष्ण के बिना कुंजों का शत्रु के रूप में महसूस होना संदेश से मथुरा के कुओं का भरना ह्रदय में माखनचोर का गड़नाए कवियों की उपमाओ को नयनों के ग्रहण न करना एवं बृषभानकुमारी अर्थात श्रीराधा का श्रीकृष्ण के अभाव में मलीन होना आदि विभिन्न विरह की अवस्थाओं में गोपियों का श्रीकृष्ण के लिए व्याकुल रहना ही सगुण रूप में स्वीकारना एवं निर्गुण ब्रह्म का नकार एवं व्यंग करती हुई परिलक्षित होती हैं जो हिन्दी साहित्य में अद्वितीय एवं अप्रतिम हैं।

सन्दर्भ :–

1. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र संवत 2069 हिंदी साहित्य का इतिहास नागरी प्रचारिणी सभा आनंद प्रेस वाराणसी
2. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, सं भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत और भ्रमरगीत सार वाणी प्रकाशन 4695 21 दरियागंज नई दिल्ली 110002 पद 34 पृष्ठ सं 73
3. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत पद 37 पृष्ठ सं 74

स्व प्रमाणित

169

4. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 39 पृष्ठ सं 74
5. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 42 पृष्ठ सं 75
6. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 52 पृष्ठ सं 77
7. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 57 पृष्ठ सं 79
8. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 61 पृष्ठ सं 80
9. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 59 पृष्ठ सं 79
10. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 62 पृष्ठ सं 80
11. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 64 पृष्ठ सं 81
12. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 75 पृष्ठ सं 84
13. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 76 पृष्ठ सं 85
14. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 85 पृष्ठ सं 87 88
15. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 89 पृष्ठ सं 89
16. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 95 पृष्ठ सं 90
17. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 97 पृष्ठ सं 91
18. शुक्ल सं आचार्य रामचन्द्र, भ्रमरगीत सार 2013 भ्रमरगीत, पद 100 पृष्ठ सं 91

❑❑❑

स्व प्रमाणित

PDF Created Using

Camera Scanner

Easily Scan documents & Generate PDF

GET IT ON Google Play

https://play.google.com/store/apps/details?id=photo.pdf.maker